

शहर समता

(हिंदी साप्ताहिक)

www.shaharsamta.com

शोध पत्र

‘कर्मक्षेत्र रणभूमि यही है, मानव हो तुम कर्म करो।
कर्म से कभी विमुख न रहना, मन में यह संकल्प करो।’-

उमेश श्रीवास्तव

संस्थापक: स्व० कन्हैया लाल, स्व० श्रीमती साधना श्रीवास्तव
सम्पादक: उमेश चन्द्र श्रीवास्तव

महिला काव्य गोष्ठी विशेषांक

वर्ष 26 अंक 22 रविवार, इलाहाबाद, 25 अक्टूबर 2026 पृष्ठ 4 विशेषांक मूल्य: 3 ₹0

✦ संपादकीय

महिला काव्य गोष्ठी विशेषांक

उमेश श्रीवास्तव

संपादक

भाव तुम्हारे कविता में सब सुंदर है,

जैसे लगता कोई यह सुंदर है।

दूर तलक कविता में तो सच्चाई है,

इसीलिए कविता में बात समायी है।

तो बात हो रही है महिला काव्य गोष्ठी विशेषांक की।

सुंदर-सुंदर भाव से लबरेज कविताओं में आपको हर प्रकार के भावों का दर्शन होगा। कविता में समर्पित भाव देखकर लगता है जैसे कोई शीतल मंद बयार आंखों को स्पर्श कर निकल जा रही है। भाव के इस सुंदर विशेषांक में कविताओं के विविध आयामों की झलकियां आपको मिलेंगी। कविता जीवन की सच्चाई है, कविता जीवन की गहराई है इसीलिए कविता में सारी दुनिया की बात समायी है जिसे शब्दों के माध्यम से व्यक्त कर हमारी रचनाकारों ने अपने हृदय पटल के सारे भाव पिरो कर निकाले हैं। कुछ बानगी देखिए -

पहली बानगी

“

हे! विषम यह युद्ध छिड़ा,
सारा खोफ प्रभु हर लीजे।
जन ही जन का लहू करे,
सकल हृदय प्रेम भर दीजे।।

दूसरी बानगी

“

उपनिषदों वेदों की भाषा,
ज्ञानियों मुनियों की भाषा।
यह है गौरवशाली भाषा,
हिंदी हमारी है राजभाषा।

तीसरी बानगी

“

पितृ हमारे ज्ञान प्रयोधा
नित करते उनका सम्मान
गळती हो तो माफ़ी कीजे
मांगें सुख समृद्धि वरदान!

इस बार महिला काव्य गोष्ठी की पुरस्कृत रचना डॉक्टर प्रतिमा दीवान की 'खुद में झाँक ले' है। विशेषांक को देखिए, समझिए और बताइए अंक कैसा लगा। अंत में

लिख-लिख कर मोती,

जो तुमने भाव बिखेरा है।

लगता है तोता - मैना का,

नूतन यह सबेरा है।

उमेश श्रीवास्तव

✦ कविताएं

कान्हा आया रे

आह ! एक मौ कितना सहती ?
कैंद हुई जब कारागार में,
बिलखती एक मौ की ममता।
बलिदान की जंजीरो से,
घायल हुई तब उसकी क्षमता।
नैन बने आँसू के प्याले,
सिसकी ओलों के निवाले।
पीड़ाए शय्या पर सोती,
आह ! एक मौ कितना सहती ?

एक ब्रह्मरूप एक शक्तिरूप से,
गोदी भरती अब हरिरूप से।
घायल ममता को देकर छाया,
कृष्णरूप में अब वह आया ।
दूट गये फिर सारे ताले,
खुलते स्वयं सारे दरवाजे।
भेजा लालन, अब यशोदा पलती,
आह ! एक मौ कितना सहती ?

वह जगकर्ता वह जग भर्ता,
लीला कर सारे दुख हरता।
रास रचा कर कूँज गलियों में,
उज्जा प्रेम सखा कलियों में।
माखन चोर बाँसुरी सुर से,
सुधबुध खोती राधे धनु से।
रोज उलाहना यशोदा सुनती,
आह ! एक मौ कितना सहती ?

आमंत्रण पाकर मथुरा का,
वृँदावन त्यागा प्यारा सा।
व्याकुल होते गोपी सारे,
यमुना, वृंक्ष, धरा भी सारे।
प्रेम के अतुलित रूप में खोया,
अहं श्याम बिना वृँदावन रोया।
यशोदा दुख से व्याकुल होती,
आह ! एक मौ कितना सहती ?

कैंस का मथुरा में सैंहार,
वासु देवकी किया प्रणाम।
यशोदा नैदन, देवकी सुत,
मथुरा का तेजस्वी नृप ।
महाभारत का यह रंगमंच,
कृष्ण भूमिका नाटक बन।
कौरव पाँडू द्वन्द्व को कहती,
आह ! एक मौ कितना सहती ?

बढ़ चली संघर्षों की गाथा,
तीर द्रोपदी पर ही साधा।
हुआ द्रोपदी चीर हरण,
प्रभु के वह आई शरण।
भरी सभा में नारी मर्यादा,
कृष्ण चीर बढ़ाते जयादा।
कितनी पीड़ा कुन्ती को होती,
आह ! एक मौ कितना सहती ?

हुआ महाभारत का प्रारंभ,
कौरव पाँडू का युद्ध आरंभ।
युद्ध भूमि में जब सब पहुँचे,
अर्जुन,पितामह गुरु से संकुचे।
सारथी बन कृष्ण ने किया प्रवेश,
गीता का तब देते वह उपदेश।
गैधारी सौ पुत्रों को खोती,
आह ! एक मौ कितना सहती ?

महाभारत का यह सँग्राम,
करता नव युग का निर्माण।
वीरो के रक्तों से रंजित,
दिशाए चीत्कार से गुंजित।
कितने ही वंशों का नाश,
मूर्कित गिरते निकलते प्राण।
धरती बलिदानों से रंगती,

आह ! एक मौ कितना सहती ?

तड़पती जब थी मौ की ममता,
देवकी गर्भ से जन्मा ललना।
कंस अभिमान पर करके घात,
युग बदल जिसके सौ हाथ।
वह युगकर्ता, वह दुखहर्ता,
वह ब्रह्मरूप, वह शक्तिरूप।
उस अंक पालने में खूला,
आह ! जिसकी मौ इतना सहती।

युद्ध क्यों?

युद्ध के आभाष से,
विचलित हुआ, मन प्राण है।

रचना सक्सेना
प्रयागराज

मानवों
के इस धरा पर,
राक्षसों का राज्य है।।

दहन हुई, सोने की लंका,
चेतना जामुत करो।
प्रेम की माला, पिरो लो,
दूत शान्ति के बने।।

युद्ध की वीथिका ने,
अनगिनत प्राणी हरे।
जो जिवित बच कर रहे,
आधेअधुरे जो रहे।।

बालकों का बचपना,



पुरस्कृत कविता

खुद में झाँक ले

मैंने खुद के अंदर कई बार झांका,

खुद के अंतर्मन को टटोला

मुझे आज तक कभी अफसोस

(पछतावा)महसूस नहीं हुआ

किसी बात के लिए

कोई भी ऐसी बात नहीं हुई

जो मुझे शर्मिंदा कर दे आईने के सामने.....

जो मुझे मेरी नज़रों में

गिरा दें,

मैंने अपने गुस्से (क्रोध)को

नियंत्रित किया

मैंने नफरत का ज़वाब, नफरत से नहीं दिया,,

मैंने उन सबको माफ कर दिया

जिन्होंने मेरा दिल दुखाया,

मैंने मेरे स्वाभिमान को कभी आहत नहीं होने दिया,,

लोग इसे मेरा गर्व कहें तो,

मैं कुछ नहीं कर सकती

बस उनसे कहूँगी,,,

आप किनारे हो जाओ,

मुझे आगे बढ़ना है,,,,,

आगे बढ़ना है!!

डॉ. प्रतिमा दीवान

धमतरी

❖ कविताएं

अनाथ हो कर रो रहा। जीत कर भी युद्ध धारी, बेवैनियों, में सो रहा।।	बात करती हैं निगाहों से निगाहें उसकी कुछ भी कहना हो इशारों में कहा करता है	कान्हा आया रे ब्रजनारी जरा मटकी तो अपनी सम्हाल। ढीठ बड़ों है मैया यशोदा तेरो लाल। मोहनी मूरत मन को भावे बिन देखे कहीं चैन नहीं आवे। कासों कहुँ मन को हाल। अब तो कृपा कर दो कान्हा काटो जग जंजाल। राधे राधे गाऊँ और तुमको रिझाऊँ। सुंदर सुंदर पद गाकर मैं तुमको सुनाऊँ। चरण कमल की भक्ति पाकर प्रभु मैं भी हो जाऊँ प्रभु अब तो माला माल। कान्हा आया रे आया रे गोपाल।	दफतरो में , अदालतों में सिसकती रहती है।
देखिए राजा सिकंदर, जीत कर भी क्या मिला? अन गिनत थी संपदा, पर, छोड़ कर सब कुछ गया।।	तिरुनगी दीद की हर पल है तरसती आंखें कैसे देखें वो हिजाबों में मिला करता है		
रो रही संवेदनाएं, प्रेम हर क्षण मौन है। स्वर्ग सी सुंदर धरा पर, राक्षसों का शोर है।।	हाथ हाथों में लिए साथ कदम चलते हैं फूल उल्फत का नजारों में खिला करता है		
डा शोभा त्रिपाठी शैल्या छत्तीसगढ़	मेरे दिलदार तुझे दुंद रही है धडकन कस्मकश दिल में फुरियाद गिला करता है	रेणुका पटेल भिलाई छत्तीसगढ़	

विश्व धरा पर संकट

हे! विश्व यह युद्ध छिड़ा,
सारा खौफ प्रभु हर लीजे।
जन ही जन का लहू करे,
सकल हृदय प्रेम भर दीजे।।

मानव ना झगड़ो आपस में
रार सभी मानव भूलेो तुम।
मीठी -मीठी यादों के संग ,
जीवन प्रेम से जी लो तुम ।।

विचलित हो जाए सब जनता,
दंग, द्वेष उर से हर लो सारी।
कैसी चली यह काली औंधी,
काल बहुत बढ़ा प्रभु भारी ?

छिड़ी युद्ध की भीषण क्रांति,
कठिन संयुक्त जग संकट छाया।
मचा हुआ चहुँ धरा में हाहाकार,
मानव को मानव से लड़ते पाया!

कुछ लेकर नहीं मानव आया,
फिर क्यों आपस कोटि वो बोता।
दंग,द्वेष हृदय में भरकर मानव,
जीवन में मानव हर-पल है रौता।।

तेरा जीवन सफल हो जाएगा,
रान नाम को जप लें मानव।
मानव ही मानव पर टूट पड़े,
कब जग में बनकर दानव।।

युद्ध विराम अब होना चाहिए,
सकल विश्व का संकट दूर हो ।
हर मानव -मानव से प्रेम करें,
धरा से लड़ाई,झगड़े सब दूर हो।।

सुषमा सिंह उर्मि
कानपुर

खुद में झाँक लें

दोष पराए गिनने से पहले, अपना लें विचार।
दर्पण में जब खुद को देखें, कैसा है व्यवहार।।

औरों की कमियाँ दिखतीं, अपनी दिखतीं क्यों नहीं,
सच कहने की बात करें हम, सच से मिलते क्यों नहीं।
दूसरों को राह दिखाने से, पहले खुद को सुधार।
दोष पराए गिनने से पहले, अपना लें विचार।।

बात-बात पर क्रोध दिखाएँ, प्रेम बँटते हैं कहीं,
क्षमा माँगने में शिक्षक हम, अहंकार है क्यों यहीं।
दूसरों को राह दिखाने से, पहले खुद को सुधार।
दोष पराए गिनने से पहले, अपना लें विचार।।

शब्दों से हम फूल सजाएँ, मन में कौंटे हैं कहीं,
मुख पर मीठी बातें रखकर, भीतर विष क्यों ढालें।
चेहरा कितना भी उजला हो, मन हो निर्मल सार।
दोष पराए गिनने से पहले, अपना लें विचार।।

जग को बदलने की इच्छा है, खुद को बदलें एक बार,
जिस बदलाव की चाह जगत में, उसका खुद लें भार।
जैसे भीतर दीप जलाएँ, मिट जाए अंधकार।
दोष पराए गिनने से पहले, अपना लें विचार।।

जिस दिन खुद की भूल दिखेगी, उस दिन होगा ज्ञान,
दण्ड तब सच बोल सकेगा, निर्मल होगा मन-प्राण।
दुनिया सुधरे या न सुधरे, सुधरे अपना संसार।
दोष पराए गिनने से पहले, खुद में झाँक लें याार।।
जय हिंद जय हिंद
वंदे मातरम्

उमा मिश्रा 'प्रीति'

मेरा महबूब अदाओं से छला करता है

मेरा महबूब अदाओं से छला करता है
कर के फरियाद सितारों से गिला करता है

सिलसिला प्यार का अब टूट गया है रब्बा
कौसे अहसास भी मुँहजोर गिला करता है

करके शिकवा मुझे महसूस कराता हरदम
तल्ख लहजों से बदन दिल का खिला करता है

राजदां हैं या कि गुमखवार कोई दुनिया में
हो जो अपना कोई हर ज़ख्म सिला करता है

मनोरमा श्रीवास्तव 'मनोरम'

कान्हा आया रे

गाओ री सखि सब मंगल गाओ री सखि।
कान्हा आया रे प्यारा कान्हा गाओ री सखि।।

रात अँधियारी मथुरा काल-कोठरी करी।
देवकी की गोदी कान्हा करन लागे किलकारी।।
मोदित भई मैं गोदी पालनहार देख कर।
स्वेद बिन्दु झरे-झरे बाबा वासुदेव माथे पर।।

कान्हा को धर टोकरी चले बाबा यमुना तीर को।
चरण पखारे यमुना कान्हा लखत नीर की।।
पहुँचे जो बाबा गोकुल रैना लहरी देर तक।
कान्हा को रख जसुदा घर कन्या लाए फेर कर।।

कान्हा विरह में बेसुध माता देवकी रोवे।
कन्या को निरखे जब-जब उर को चैन तब होवे।।
यशुदा के घर-आँगन में बाजे बंधाई है।
हर्षित हैं सब नर-नारी जन्मा कन्हाई है।।

डाँ0(कु0)नश्वि जायसवाल,
प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

खुद में झांक लें

रास्ते से भटका हुआ राही सा दीख रहा है ,
अपना सा होकर भी क्या सख्ता हो नहीं सकता ।
लड़खड़ा कर चलते हुए बीमार सा लगता है ।
मन का संतुलन खोकर भी बीजारा हो नहीं सकता ।

संसार की बुराई कर खुद ही दोषी बन बैठा ,
दार्शनिक विचार रख मन से हारा हो नहीं सकता।

ध्यान लगाए बैठा जो ईश्वर में तल्लीन है ,
पूजा-पाठ न कर भी बेसहारा हो नहीं सकता ।

हृदय हिलोरे लेता पर आंखे शांत दिखती है ,
बिना किसी की राह तके मौन से गुजारा हो नहीं सकता।

पक्षियों संग वह बैठ मीठे गीत गुनगुनाता है ,
भँवरें संग फूलों सा क्या नजारा हो नहीं सकता ।

जाने पहचाने चेहरे को याद करने की कोशिश है ,
इतना अपनत्व देकर क्यूँ हमारा हो नहीं सकता।

उसकी मुस्कुराहट ने मन को सुकून दिया है ,
मेरे छाया बन अब क्या ऐसा नजारा हो नहीं सकता।

कदमों से कदम मिला निशानी बन ही जाता है ,
कदमों तले मेरे प्रतिबिंब का दूसरा सहारा हो नहीं सकता।

सरिता कपूर,
गाजियाबाद

कान्हा आया रे

कान्हा आया रे आया गोपाल।
तिरछी चितवन श्याम सलोना
है मवाली चाल।
मोर मुकुट लट हैं पँधुराले
गले वैजन्ती (हैं मोतियन)की माल।
माखन मिश्री के लोभ में लाला
गोपियों के आंगन में नाचे दे द ता।ल
रुनक सुनक पैजनियाँ बाजे
शब्द लागे अति मधुर रसाल।
गोपियों के घर करता माखन चोरी
संग में सब सखा हैं गाल बा।ल।
कंकड़ी मार के मटुकिया फोड़े
भिगोये री साड़ी।

उपनिषदों वेदों की भाषा,

ज्ञानियों मुनियों की भाषा।
यह है गौरवशाली भाषा,
हिंदी हमारी है राजभाषा।

इतिहास के पन्नों में वर्णित,
भारत को पहचान दिलाती।
एकता के सूत्र में देखो ,
हिंदुस्तान को पिरोती जाती।

भाषों को अभिव्यक्त करें ये,
सहज,सरल हो सबके मन भाए।
हिंदी में इतनी मिठास छुपी है ,
खिंदी भी इसकी बोलती जाए।

हिंदी का परचम लहराएं,
भारत का ऊँचा मान बढ़ाएं।
हिंदी भाषा अपना कर सब,
इसको वैश्विक भाषा बनाएं।

जैसे जननी कहलाती माता,
वैसे हिंदी कहलाती मातृभूमि।
जैसे सजे माँ के माथे पर बिंदी,
वैसे सजे राष्ट्र में हिंदी।।

श्रद्धा श्रीवास्तव,
कानपुर

मैं हिंदी हूँ!

क्या हम गुनहंगार नहीं ?
मुख से
जो फूटा था
शब्द प्रथम - वो 'मैं' ही था ,
मंद , मौम या मम्मी नहीं।
जैसे बहुत हों
भाव एक हो
फिर भी क्यों?
अपनी मैं मांगे
घर में हक अपना
औ'
अपने ही बेटे
आवाज उसकी सुन न पाएं।
कानों में ओं
जिझा पर ओं
किस भाषा में लिखा गया था ?
आज वही
हम बोलने से कतराते हैं ,
बच्चे बोले तो शर्मिंदगी लगती है।
अपनी संस्कृति से
अब परायी प्रिय लगती है।
शर्म उन्हें नहीं आती है ,
जो जन्मे इस धरती पर
पैरोकार बने विदेशी भाषा के
शान से बोलते हैं।
उन्के अपने सुनने वाले
सिर धुनते हैं।
नाज तो उन पर है ,
जो विदेशी जमीन पर
हिंदी का परचम लहर रहे हैं।
सिखा रहे हैं
और विश्व में एक महत्वपूर्ण भाषा
बनाने की लड़ाई लड़ रहे हैं।
किस तरह अपने प्रयासों से ,
हम जिसे देश में
स्वीकार नहीं कर पाये
राजभाषा तक।
हिंदी भी अपने हक के लिए
साल में एकबार
अखबारों ,
जलसों ,
प्रतियोगिताओं में
जोर शोर से
अपनी ही धरती पर
अपने बारे में
अपनी महिमा सुनती है।
फिर पूरे साल

दफतरो में , अदालतों में
सिसकती रहती है।

रेखा श्रीवास्तव

हिन्दी दिवस

मैंने हिंदी दिवस मनाया।
हिन्दी मे कुछ लिखकर गाया।
मैंने बोला हिंदी कविता।
जैसे बहती है सुर सरिता।

हिंदुस्तान में जन्म लिया है।
हिन्दी मे ही सांस लिया है।
हिन्दी को माथे पर रखकर।
हिन्दी ही दिन रात जिया है।
क्या बोलू हिंदी की महिमा।
कैसे गाऊँ इसकी गरिमा।
मेरी भाषा हिन्दी प्यारी।
हिंदुस्तान की राज दुगारी।
पल पल हिंदी क्षण क्षण हिंदी।
हिन्दी चढ़ी जुबान हमारी।
भाषा को उन्नत करना है।
हर जुबान हिंदी कहना है।
छंद लिखू हिंदी में सब जग।
हिन्दी दिवस मनाऊ तब तब।
मां हिंदी हिंदी से रिशत।
हिंदुस्तान अभिवादन करता।
जय हिंदी जय हिंद की भाषा।

संतोष मिश्रा दामिनी
प्रयागराज।

हिन्दी है जान हमारी

मान बढ़ाया अंग्रेजी का,
हिन्दी का अपमान हुआ है।
हिन्दी दिवस मनाते जैसे,
हिन्दी का अवसान हुआ है।

भारत का गौरव है हिन्दी ,
माटी की शोभा है हिन्दी।
यही सभ्यता यही संस्कृति,
सबकी अभिलाषा है हिन्दी ।
आजादी है यहाँ अधूरी ,
जब तक हिन्दी से है दूरी ।
हिन्दी लाकर ही दम लेंगे,
तभी प्रतिज्ञा होगी पूरी।

हिन्दी है जान हमारी ,
आन ,बान और शान हमारी ।
बनी हृदय की धड़कन हिन्दी,
हिन्दी है मुस्कान हमारी!!

अनीता दुबे
जबलपुर (मध्य प्रदेश)

मेरी प्रिय भाषा हिंदी है।

मेरी प्रिय भाषा हिंदी है।
और अपनी भाषा का
हृदय से करती हूँ सम्मान।
गर्व है मुझे अपनी सनातन संस्कृति पर।
अपनी हिंदी भाषा पर है अभिमान।
मेरे लिए सर्वोत्कृष्ट भाषा हिंदी है।
ये तो जैसे भारत माता के
माथे पर सजी सुहाग की खिंदी है।
यह भाषा हमारी सभ्यता और
संस्कृति की है पहचान।
संस्कृत से उदम इसका
भाषा बिना मिले ना ज्ञान
हर भारतीय के हृदय में हो हिंदी
यैसे जैसे देह में प्राण।
कवियों की कविता
श्री कृष्ण की गीता
तुलसी का रामायण
जिसमे बहती भक्ति की सरिता।
ऋषियों और मुनियों ने
इस भाषा में लिखे हैं ग्रंथ महान।

वर्षों पहले देश आजाद हो गया है
लेकिन हम आज भी बने हुए हैं
अंग्रेजी भाषा के गुलाम।
अपनी भाषा पर शर्म कैसा
हिंदी में लिखना वदना और
करना है संभ्रान्त।
संकोच जरा भी नहीं हमको
हिंदी बोलने में सम्झौती हूँ
मैं अपनी शान।
अपने भावों को व्यक्त करने का
माध्यम हिंदी लगता है
सहज और सरल।
हो प्रदर्शित हिंदी में
हमारी हर कला कौशल।
अपने देश में इसी भाषा को

❖ कविताएं

पढ़कर बने हैं बड़े बड़े विद्वान।

रेणूका पटेल

अर्थहीन स्वर और व्यंजनों का महत्व

भारत माता के माथे पर बड़ी बिंदी महत्वपूर्ण है, भारतवासियों की जिल्हा पर हिंदी महत्वपूर्ण है।

स्वरों -व्यंजनों के मिलाप से शब्द बनते महत्वपूर्ण है, अ से लेकर झ तक सभी अक्षर महत्वपूर्ण हैं।

उनमें भी अः इ, यं, ग अक्षर अति महत्वपूर्ण है, नम् में अः के युक्त होने से ही परमेश्वरया नमः शब्द महत्वपूर्ण है।

आत्म शुद्धि के लिए प्रभु वंदन महत्वपूर्ण है।

घ में इ के युक्त होने से ही घड़ा शब्द परिपूर्ण है, ग्रामीणों की व्यास बुझाने में देशी फ्रिज महत्वपूर्ण है।

व में यं के लगने से ही व्यंजन शब्द महत्वपूर्ण है, व्यंजनों के साथ ही व्यंजन शब्द महत्वपूर्ण है।

व में ग के मिलन से ही वीणा और वाणी शब्द अर्थपूर्ण है, विद्या बुद्धि की प्राप्ति में वीणा वादिनि महत्वपूर्ण है।

सभी भाषाओं में मातृभाषा हिंदी महत्वपूर्ण है, सुसम्बंधों की प्राप्ति में मृदवाणी महत्वपूर्ण है।

माँ बाप दोनों भूखे ही खामोश सो गए।।

मौजूदगी से उनकी मिली रहे नई नई।
हम उनके नाम से मैशहूर हो गए।।।

माँ बाप थाम लेते हैं गिरते हर हमे
टूटे हुए जो ख्याब थे भरपूर हो गए।।

हैंस कर उन्होंने दर्द हमारे मिटा दिये।
अपने गमों से हम तो बहुत दूर हो गए।।

उनकी दुआओं से जीवन सफल हुआ।
अजीज फिर उनकी आंखों का हम नूर हो गए।।

अफ़रोज़ अजीज़
दिल्ली इकाई।

‘आओ श्राद्ध पक्ष में करलें हम पितरों का तर्पण’

आओ श्राद्ध पक्ष में कर लें हम पितरों का तर्पण
उनके पद चिन्हों पर चलकर करते भाव समर्पण

पितरों की पूजा करने से घर में आती खुशहाली
सुख- समृद्धि, धन बल हो, शांति की हरियाली
फूलें -फलें दुआओं से , भावों का करते हैं अर्पण
आओ श्राद्ध पक्ष में कर लें हम पितरों का तर्पण

ज्ञान -धर्म सब मिला उनसे ,उनके प्रतीक हुए हम
सुंदर जीवन मिला है उनसे उर से कृतज्ञ हुए हम
मिलती हमें प्रेरणा शक्ति करते मन से हम वंदन
आओ श्राद्ध पक्ष में करलें हम पितरों का तर्पण

नमन करें हम पितरों का , क्षमा मांग लें उनसे
हाथ जोड़कर माफ़ी मांगे, भूल हुई जो हमसे
कृपा दृष्टि बनाए रखना ,कष्टों का करें निवारण
आओ श्राद्ध पक्ष में कर लें हम पितरों का तर्पण

पितृ हमारे आराध्य देवा ,मानवता पाठ सिखाया
त्याग,दया और प्रेम करुणा,का रंग मन भरसाया
उनकी सीखों पर चलकर , गर्वित होता तन -मन
आओ श्राद्ध पक्ष में कर लें हम पितरों का तर्पण

आशा जाकह् ‘आस’
इन्दौर

पितृ पक्ष सद्भावना

पितरों का पावन दिन आया, कृष्ण आश्विन मास है।
आओ मिलकर नमन करें हम, पितरों को यह आस है।।

स्मृतियों में बसे हुए जो, उनकी अर्पण खास है।
श्रद्धा के निर्मल जल से ही, मिटती भी मन की प्यास है।।
जिनसे जीवन चलता जाता, उनका शुभ आशीष रहे।
आओ मिलकर नमन करें हम, पितरों को यह आस है।।

संस्कारों से जीना सीखा, जीवन यही सुवास है।
मन में उनकी छति बसती, अटूढ़ रहे विश्वास है।।
दीप जलाकर प्रेम से, मंगलमय हर भाव रहे।
आओ मिलकर नमन करें हम, पितरों को यह आस है।।

कुश, जल, तिल सब अर्पण करके, मन में श्रद्धा वास है।
अन्न दान अमावस को करना, सबका यही प्रव्रस है।।
पीढ़ी-दर-पीढ़ी चल जाए, संस्कारों का भाव रहे।
आओ मिलकर नमन करें हम, पितरों को यह आस है।।

जो इस जग से दूर हुए वो, दिल के फिर भी पास हैं।
उनकी यादों की छाया में, आज भी जीवन खास है।।
उनके चरणों में श्रद्धा से, नमन सदा पावन रहे।
आओ मिलकर नमन करें हम, पितरों को यह आस है।।

पितरों का पावन दिन आया, कृष्ण आश्विन मास है।
आओ मिलकर नमन करें हम, पितरों को यह आस है।।

छाया स्वसेना ‘प्रभु’
जबलपुर (मध्यप्रदेश)

पितृ हमारे

पितृ हमारे ज्ञान प्रयोधा
नित करते उनका सम्मान
गलती हो तो माफ़ी कीजे
मांगें सुख समृद्धि वरदान!

चलते उनके पद चिन्हों पर
जो निशान उन्होंने बनाए
दिखलाए सदपथ हमको
हम उन पर ही चलते जाएं!

अमर बेल जो अमर लता
वंश बेल को बोया आपने
अपनी जड़ों को धरा पर
अमृत जल से सिंचित कर!

फल फूल रहे अपने पल्लव
घर में रहा निसिंदन कलख
आपके आशीर्वादों का फल
द्वारपाल बन खड़े हैं भैरव!

वरदान कभी अचूक न जाए
हम पर कृपा बरसाते जाएं
तर्पण अर्पण धन धर्म सब
श्रद्धा से हम शीश नवाएं!

डॉ साधना शुक्ला

❖ गद्य

रिशतों की गर्माहट

मनुष्य के जीवन में रिश्तों का स्थान उस दीपक के समान है, जो अंधेरे में प्रकाश ही नहीं देता, बल्कि मन को सुरक्षा और अपनत्व का एहसास भी कराता है। जीवन चाहे किन्तना भी सुख-सुविधाओं से भर जाए, यदि उसमें आत्मीय रिश्तों की गर्माहट नहीं है, तो भीतर कहीं एक रिक्तता बनी रहती है। रिश्ते केवल रक्त के संबंधों का नाम नहीं, बल्कि विश्वास, संवेदना, सम्मान और अपनत्व से बने वे बंधन हैं, जो मनुष्य को मनुष्य से जोड़ते हैं। रिश्तों की गर्माहट का सबसे सुंदर रूप तब दिखाई देता है, जब बिना कहे कोई हमारे मन की बात समझ ले। कभी माँ की आँखों में छिपी चिंता, पिता के मोन में छिपा स्नेह, बाहू-बहन की छोटी-सी नोकझोंक, मित्र का कठिन समय में साथ खड़ा होना—ये सभी जीवन की ऐसी मुँजी हैं, जिनका मूल्य किसी धन-दौलत से नहीं आँका जा सकता। आज का जीवन बहुत तेज़ हो गया है। तकनीक ने दूर बैठे लोगों को पास ला दिया है, लेकिन कई बार पास बैठे लोगों के बीच भी दूरी बढ़ा दी है। मोबाइल की स्क्रीन पर हम सैकड़ों लोगों से जुड़े रहते हैं, परंतु घर में बैठे अपने ही लोगों से बातचीत के लिए समय नहीं निकाल पाते। संदेशों और तस्वीरों ने संवाद का स्थान ले लिया है। ऐसे समय में रिश्तों की गर्माहट को बनाए रखना पहले से अधिक आवश्यक हो गया है।

रिश्ते केवल खुशियों में साथ रहने से मजबूत नहीं होते। उनकी असली परीक्षा कठिन समय में होती है। जब परिस्थितियाँ विपरीत हों, तब किसी का यह कहना—चिंता मत करो, मैं तुम्हारे साथ हूँ—मन को ऐसी शक्ति देता है, जो बड़े से बड़ा सहारा भी नहीं दे सकता। कभी-कभी किसी रिश्ते को बचाने के लिए केवल एक कदम पीछे हटना, अपनी बात मनवाने के बजाय दूसरे की बात समझना और समय पर ‘माफ़ कर दो’ कह देना ही पर्याप्त होता है। रिश्तों में प्रेम के साथ सम्मान भी आवश्यक है। जहाँ सम्मान नहीं, वहाँ अपनापन धीरे-धीरे बोझ बन जाता है।

परया धन

‘बुआ, मेरी गुड़िया मत ले जाना।’
‘बिड़ू ने गुड़िया सीने से चिपका ली।
बुआ हैंस पड़ी, ‘अरे पाली! मैं तो बस देख रही हूँ।’
दादी ने मुस्कुराकर कहा, ‘बुआ तेरी अपनी हैं बिड़ू।’
‘अपनी हैं’, तो मैं उन्हें अपने घर क्यों नहीं रख सकती?’
बुआ और दादी एक-दूसरे का चेहरा देखने लगीं।
बुआ ने बात बदलते हुए कहा, ‘तू भी बड़ी होकर अपने घर

चली जाएगी।’
बिड़ू ने तुरंत पूछा, ‘क्यों?’
‘क्योंकि बेटियाँ तो दूसरे घर की होती हैं।’
बिड़ू कुछ पल चुप रही। फिर दादी के पास जाकर बोली, ‘दादी, बुआ भी दूसरे घर की थीं?’
दादी की मुस्कान गायब हो गई।
‘हाँ बिटियाफू’
‘फिर आपने उन्हें भेज क्यों दिया?’
दादी की आँखें खुंक गईं।
बिड़ू ने उनका हाथ पकड़ लिया, ‘बुआ की विदाई पर आप रोई क्यों थीं?’
दादी की आँखें भर आईं।
बिड़ू ने अगला सवाल कर दिया, ‘और बुआ जब आई हैं, तो आप उन्हें देखकर इतना खुश क्यों होती हैं?’
इस बार बुआ की आँखों से भी आँसू छलक पड़े।
बिड़ू ने दोनों को देखा और अपनी गुड़िया को गोद में बैठते हुए बोली—
‘दादी, एक बात बताऊँ? अगर बेटी पराई होती है, तो उसकी विदाई पर माँ रौती क्यों हैं और उसके लौटने पर घर हैंसता क्यों है?’
कमरे में सन्नदा उतर आया।

उमा मिश्रा ‘प्रीति’

भीड़ में अकेला इंसान

शहर की सड़क पर आज बहुत भीड़ थी। चारों ओर भागते लोग, हॉर्न की आवाज़ें, चमकती दुकानें और मोबाइल में व्यस्त चेहरे—सब कुछ जीवंत था, फिर भी अमर को सब सूना-सूना लग रहा था। वह चौराहे के पास खड़ा लोगों को देख रहा था। किसी के पास समय नहीं था। पास से गुज़रते एक परिचित ने उसे देखा, मुस्कुराया और मोबाइल पर बात करते हुए आगे बढ़ गया। अमर के हाथ में माँ की पुरानी चिड़्डी थी। माँ को गुज़रे दो वर्ष हो चुके थे। आज न जाने क्यों उसे लगा कि काश कोई उसके पास बैठकर पूछ लेता—‘कैसे हो?’
भीड़ बढ़ती गई, लेकिन उसकी तन्हाई भी उतनी ही गहरी होती गई।
तभी एक छोटा बच्चा उसके पास आया। उसने अमर का उदास चेहरा देखा और बोला,
‘अंकल, आप अकेले क्यों खड़े हैं?’
अमर चौंका। बरसों बाद किसी ने उसके चेहरे को पढ़ा था। अमर मुस्कुराकर कहा, ‘शायद मैं भीड़ में अपना कोई ढूँढ़ रहा था।’

बच्चे ने उसका हाथ पकड़ लिया—‘तो चलिए, मेरे साथ। मेरी मम्मी कहती हैं, किसी को अकेला नहीं छोड़ना चाहिए।’
अमर की आँखें नम हो गईं।
उसने मुस्कस किया—अकेलापन लोगों की कमी से नहीं, अपनापन ढूँढ़ने वालों की कमी से पैदा होता है।
उस दिन भीड़ वहीं थी, शहर वहीं था, लेकिन अमर के भीतर कुछ बदल चुका था।

अनीता दुबे
जबलपुर (मध्य प्रदेश)

बुजुर्गों का घर में स्थान

निवास और पौष्टिक आहार की आवश्यकता हर प्राणी को होती है।
वानर एक ऐसा प्राणी है जो कभी घर नहीं बनाता हैं और बाकी सभी प्राणी अपना निवास अवश्य बनाते हैं। जिस तरह से एक पक्षी अपने संतान को जन्म देते ,पालन पोषण करने और जीवन जीने योग्य बनाने के लिए अपने घोंसल े बनाते हैं उसी तरह से मनुष्य भी अपनी भावी संतान को समाज में जीवन जीने योग्य बनाने के लिए चल और अचल संपत्ति बनाता है। धार्मिक विधि विधान पूर्वक घर की नींव रखता है और गृह प्रवेश करता है। घर का मुखिया और गृहणी केवल घर की नींव, दीवारें और छत ही नहीं डलावते बल्कि घर के सदस्यों में परस्पर निस्वार्थ प्रेम, संवेदना सहयोग और भावनाओं सभी बहुत आवश्यक मिश्रण को डालते हैं। तभी वास्तविक रूप से घर का निर्माण होता है। बुढ़ ज्ञान घर और समाज में प्रचलित त परंपरा, संस्कृति और सभ्यता को कथा कहानियों के माध्यम से आगामी पीढ़ी तक पहुंचाने वाली प्रमुख कड़ी होते हैं। ये घर के मजबूत आधार स्तंभ और नींव होते हैं। ये भावी पीढ़ी की उन्नति और प्रगति के लिए सीढ़ी का काम करते हैं। प्पा पार पर आने वाली समस्या का समाधान अपने अनुभव से निकालते हैं। एक पैथा बड़ा होकर छायादार वृक्ष बनता है, फल और आक्सीजन देता है और भीषण गर्मों में हवा का माध्यम बनाता है और तो और मिट्टी की कटान रोक अति वृष्टि के कारण बाढ़ जैसी प्राकृतिक आपदा से लोगों को बचाता है। फल न दे सकने की दशा में छाया और छाया भी नहीं दे सकने की दशा में ये परोपकारी वृक्ष घर के फर्नीचर, खिड़की और दरवाजे बन जाते हैं, कच्चे और भोज्यपदार्थ को पकाने का माध्यम बन जाते हैं। उसी तरह से घर के आधार स्तम्भ बुढ़ ज्ञन अपनी संतानों को समाज में जीवन जीने योग्य बनाते हैं, पालन पोषण करते हैं, सींघते और संवारते हैं।। फल न दे सकने और कुछ नहीं कर पाने की स्थिति में भी घर के सदस्यों को

शहर समता - ब्यूरो प्रमुख

केलपुर ब्यूरो - निता अग्रवाल - 91 98078 96997

जबलपुर ब्यूरो -अनीता दुबे - 91 76986 69222

जीमूढ़ ब्यूरो - डॉ मृग पाठक - 91 9451 69552

इंदौराब ब्यूरो -रीतग प्रदीप कुमार - 91 79035 29183

मिर्जापुर ब्यूरो - संजया घेंडेर - 91 89934 42579

भोरबलुर ब्यूरो - संरिता सिंह - 96282 04228

दिल्ली ब्यूरो - अमरोज अजीज - 91 96438 86797

तिरुचुलिया गोलाघर ब्यूरो - रजना विमनो - 91 94355 15469

प्रयागराज ब्यूरो - नीता सिंह 94152 13651

छाीगढ़ 270ई विटो - प्रमोदवी कौर - 91 76989 19159

इंदौर ब्यूरो - अरुण अग्रह - 91 87459 89496

निरास ब्यूरो - नीता शर्मा - 91 98636 29640

भिलसपुर ब्यूरो -संरिता बनकर - 91 79003 39148

राजपुर ब्यूरो - नीमा निगर - 91 76984 58122

कानपुर ब्यूरो - ब्रह्मा श्रीवास्तव 737615 451

भीमाल ब्यूरो - सदान कुमार - 91 94268 25647

जबलपुर इकाई - स्फुटि मिश्रा रंशिर - 91 82004 21143

बनारस ब्यूरो - सुनीता जौहरी - 91 836 886 855

मिथनास इकाई - सैयद अजीमशर खानुन - 91 96787 72219

फिरोज़ ब्यूरो - ऋतुव्रता रस्तोगी - 91 98971 11416

दमरौ ब्यूरो - ब्रह्मा अग्रवाल - 91 8265 018 551

झांसी ब्यूरो - अंजु पारती - 91 84709 77659

गोहा ब्यूरो - संरिता कलुर - 91 72788 96708

मुसलपुर ब्यूरो - नासिरी कुलि - 91 83170 46108

कोटा ब्यूरो - प्रवीण किशोर - 91 85954 69688

पाटन ब्यूरो - आ. नीम परेशर - 91 79708 00416

लखनऊ ब्यूरो - अरुण गुप्ता - 91 97933 19465

मंडला ब्यूरो - डॉ अरविन जैन - 91 83002 55500

भीमाल इकाई - डॉ राजनी शोक्लान 80448 26922

संस्थापक

रवा कन्हैया लाल, स्वो साधना श्रीवास्तव

ग्रामाच्छा - उरु शोकाक्ष

छमेशा चहन्न -श्रीवास्तव इकाई

अरुणरुई नो 01 9141N/2061/3996

संरचित शहरीना

रजना स्वसेना

Email-shaharavanta@gmail.com

संस्थापिका/मूद्रक/प्रकाशक/सम्पादक अमरा उरु श्रीवास्तव इकाई

इंटीप्रेशन प्रेस (प्री.) प्राविती, 36 प्पा पाला रोल, इलाहाबाद से मुद्रिता

कराकर 289/2382, (अननन भवन) कनरनास, इलाहाबाद से प्रकाशिता।

प्र अंक के प्रकाशन सम्मान सम्पादक के पत्रपत्र पत्र सम्मान प्रेस भी अरु की, पत्र के अरुवर्त

अरुवर्ती त्वा सम्मान किताब का विवरण इलाहाबाद -मध्यप्रदेश में हो श्कती।

❖ गद्य

छाया देते हैं, अपने अनुभव से हर सदस्य की समस्या को सुलझाते हैं, आगामी समस्या और संकट को महसूस कर घर के सदस्यों को संकेत देकर सावधान करते हैं और उनके निस्तारण का सुझाव देते हैं। भावी पीढ़ी से अनुरोध है कि पाश्चात्य सभ्यता का अंधानुकरण न करें । हर दिन मातृ,पितृ, भातृ और बहन दिवस मनावे। अपने दिन का प्रारंभ ही माता पितृ,अग्रज और भगवान के शुद्ध हृदय से स्पर्श और चरण स्पर्श से करें। अति व्यस्त दिनचर्या में भी कुछ ही घंटे सही घर के सभी सदस्य परस्पर संवाद स्थापित करें और साथ में भोजन करें।रामचरितमानस में गोस्वामी तुलसीदास जी ने इस चौपाई के माध्यम से प्रातः काल उठ धरि रघुनाया। मात पिता गुरु नाराह माया।। समाज की भावी पीढ़ी को महत्वपूर्ण संदेश दिया है।

साधना खरे
हर्षवर्धन नगर मीरापुर
प्रयागराज उत्तर प्रदेश

रिशतों की गर्माहट

बीते कल के विराम को आगे बढ़ाने की, हर कोशिश के सफल होने की संभावना, आज छिप्राती प्रतीत होती है । हर बात पर समर्थन में सिर हिलाऊँ , मैं कुशलवर्क हूँ , जवाब में नहीं लिखा जाता ।आज रिश्ते-नाते सभी बनावटी प्रतीत हो रहे हैं । इस भीड़ की दुनिया में मिलने-मिल ने वाले सभी मिलने से पहले जेबों की ताकत टटोलते हैं । औपचारिक होती जा रही ये दुनिया, रिश्तों के गर्माहट की कभी से विकुदनी जा रही है । सोशल मीडिया तक ही रिश्तों की सीमितता, अनायास मिल जाते पर, मन की बातों को छिपाकर मुस्कुराने का चलन हो वाला है । इन छप्प मुस्कुराहटों की कोशिशों से, अतार्किक शंकाओं से, अकारण ही विवाद बढ़कर दूरियाँ पैदा कर रहे हैं।

इस तरह के विवादों में फँसे शून्य को बढ़ता देख, असहमतिवाँ भले ही हों , पर पुनः संवाद स्थापित, करने के लिए आगे आना होगा। जिसके लिए मन व मस्तिष्क को जोड़ दुनिया में, वृक्ष की भांति शीतल छाँद प्रदान करने को, प्रयासरत रहने के लिए हरसंभव प्रयत्न करना चाहिए ।

सरिता कपूर,
गुजियाबाद

पुरानी संदूकची, नई रोशनी

आरव की दुनिया उसकी उम्रिलियों पर चलती थी। एक स्पर्श और जानकारी सामने, दूसरा और दुनिया का कोई कोना स्क्रीन पर खुल जाता। दादाजी की दुनिया दूसरी थी-कामज पर लिखे खत, स्थितियों में बसे चेहरे और मौसम को देखकर बदलती दिनचर्या।

दोनों के बीच स्नेह था, पर बातचीत कम होती जा रही थी।

दादाजी बड़ अपने समय की कोई घटना सुनाने लगते, आरव धीरे-धीरे मोबाइल की कोई घटना सुनाने लगते, बार टोकतीं, 'दादाजी कुछ कह रहे हैं', ध्यान से सुने।।' आरव स्तिर हिला देता, लेकिन उसकी आँखें स्क्रीन पर ही टिकी रहतीं।

पिता यह सब देखते थे। उन्हें लगता था, समय बदल रहा है तो रिश्तों को भी अपनी भाषा तलाशनी होगी।

एक दिन विद्यालय में बच्चों को परिवार की किसी पुरानी वस्तु के पीछे छिपी कहानी सुनानी थी। आरव सोच में पड़ा था कि वह क्या ले जाए।

शाम को दादाजी अपने कमरे से एक छोटी-सी लकड़ी की संदूकची उठा लाए।

‘इसे ले जाओ।’

‘संदूकची खुली तो उसमें कुछ पुराने पोस्टकार्ड, पीले पड़ चुके चित्र, एक छोटी-सी डायरी और कागज की पुड़िया में सहेजे हुए बीज थे।’

‘इनकी भी कोई कहानी है?’ आरव ने पूछा।

दादाजी मुस्कुराए, ‘हर चीज की होती है... वस सुनने वाला चाहिए।’

डायरी में वर्षों पहले लगाए गए पौधों का हिसाब था-कब बीज डाला, पहली कोपल कब निकली, किस पौधे ने गर्मी सह ली और किसे अधिक पानी ने नुकसान पहुँचाया।

आरव ने दृढ़त टैबलेट उठा लिया।

‘दादाजी, आपकी डायरी बहुत पुरानी है। इसे हम सुरक्षित कर सकते हैं। मैं इसकी तस्वीरें लेता हूँ और आपको बाते भी रिकॉर्ड करूँगा।’

दादाजी ने चश्मे के ऊपर से उसे देखा।

‘तो मेरी यादें अब तुम्हारे टैबलेट में रहेंगी?’

‘हाँ। हमेशा रहेंगी।’

उस दिन के बाद घर में एक नया सिलसिला शुरू हुआ। आरव हर शाम कुछ देर दादाजी के पास बैठने लगा। कभी पुराने पत्रों की तस्वीरें लेता, कभी उनका आवास रिकॉर्ड करता, कभी डायरी के किसी पन्ने को पढ़कर उनका अर्थ पूछता।

बदले में दादाजी उसे ऐसी बातें बताते, जिन्हें किसी वेबसाइट पर ढूँढना आसान नहीं था-मिछी की नमी देखकर पानी की जरूरत समझना, मौसम की चाल पहचानना, बीज को सही समय तक प्रतीक्षा करवाना और यह कि हर पौधे की अपनी गति होती है।

एक दिन आरव ने पूछा, ‘दादाजी, आपको पौधों की इतनी बातें कैसे याद रहती हैं?’

दादाजी ने सहजता से कहा, ‘किताबों से थोड़ा... अनुभव

से बहुत।’

आरव कुछ क्षण चुप रहा। फिर उसने टैबलेट में एक नया फोटोर बनाया-‘दादाजी का हान।’

मौ ने यह बदलाव देखा तो उन्होंने पुराने एलबम निकाल कर मेज पर रख दिए।

‘इनमें भी बहुत-सी कहानियाँ हैं,’ उन्होंने कहा।

पिता ने दादाजी की पुरानी डायरी के कुछ पन्ने स्कैन कर दिए। फिर घर में एक साझा डिजिटल संग्रह बन गया-‘हमारे घर की स्मृतियाँ’।

उसमें दादाजी के अनुभव थे, दादी की लिखी रेसिपियाँ, मौ के बचपन की तस्वीरें, पिता के छात्र जीवन के किस्से और आरव की बनावी छोटी-छोटी डिजिटल फिल्में।

अब बातचीत केवल आरव और दादाजी के बीच नहीं होती थी। कभी मौं कोई पुरानी बात जोड़ देतीं, कभी पिता किसी भूले हुए प्रसंग को याद कर लेते। एक पुरानी स्मृति किसी नई कहानी को जन्म दे देती।

दादाजी भी धीरे-धीरे आरव की दुनिया में प्रवेश करने लगे थे। आरव ने उन्हें वीडियो कॉल करना सिखाया। पहले

ी बार स्क्रीन पर अपने पुराने मित्र को देखकर दादाजी देर तक हँसते रहे।

‘अरे, तुम तो बिना आए ही सामने बैठ गए!’

आरव खिचखिचा उठा।

एक शाम दादाजी ने उसे मोबाइल पर कुछ करते देखा तो बोले, ‘तुम मुझे तकनीक सिखाते हो और मैं तुम्हें ठहरना सिखाता हूँ।’

आरव ने मुस्कुराकर कहा, ‘तभी तो हमारी टीम पूरी है।’

दादाजी ने उसके सिर पर हाथ रख दिया।

रात को आरव ने संदूकची फिर खोली। सबसे ऊपर वही पुराना पत्र रखा था, जिसे वह सुबह दादाजी से पढ़वा चुका था। उसके नीचे उसने अपना टैबलेट रख दिया।

दादाजी ने पूछा, ‘इसे यहाँ क्यों रख दिया?’

आरव बोला, ‘दोनों में यादें हैं न।’

दरवाजे पर खड़ी मौं मुस्करा दीं। पिता ने कमरे की बत्ती बुझाते हुए कहा, ‘हाँ, वस फर्क इतना है कि एक को सँभालकर रखना पड़ता है और दूसरी को चार्ज करके।’

दादाजी हँस पड़े।

कमरे में अंधेरा हो गया।

लेकिन संदूकची में रखा पुराना पत्र और मेज पर पड़ा टैबलेट-दोनों जैसे अपनी-अपनी रोशनी में चमक रहे थे।

छाया सक्सेना प्रभु
जबलपुर (मध्यप्रदेश)

संस्मरण

बुजुर्गों का घर में स्थान,,
‘वह बुजुर्ग’

एक पिता ने, ईश्वर का सुमिरन करता वह बुजुर्ग,, जिनके चेहरे पर प्रसन्नता, तोसोष, और शांति की आभा लिए,

दिख जाते थे अक्सर,, गांव के किसी भी रास्ते पर दहलते हुए, एक अंतराल के बाद गांव जाना हुआ, तो उनके चेहरे

पर प्रसन्नता के भाव तो दिखे,, मगर भीतर तक कठोरता,, एकान्की पन भी झलक रहा था कहीं ।

जीवन के अस्सी से भी अधिक वसंत देख चुकी उनकी आँखें,, उन्मत्तार कर रही थीं भीतर की वेदना को ।

वह मुँखिया है भरे -पूरे और समृद्ध परिवार का,, कुशलता से निर्बिहन कर चुका है वह,, सभी मस्तिदायिर्को ।

मगर जीवन की कठ और अटल सपाई को मानना नहीं होता इतना आसान,, उम्र के इस पड़ाव पर,,

जीवन सिंगीनी का बिवाह,अखरता है हमेशा ।

जीवन के तमाम साझे अनुभव,, दस्तक दे जाते हैं अक्सर,, मानस पटल पर ।

गहरी खाशोशी लिए ताकता है वह शून्य में,, और बढ़ा लेता है,, कदम पर की ओर ।

घर की ओर,,.....

‘घर की मजबूत,, नींव होते हैं बुजुर्ग,, हर मुश्किल में,, आशीर्वाद होते हैं बुजुर्ग ।

धूप चाहे किन्तनी भी तेज हो ज़िंदगी में,, पने वृष की ठंडी छांव होते हैं बुजुर्ग ।

‘घर में बुजुर्गों का स्थान भगवान के समान और किसी घने छायादार वृक्ष की तरह होता है ।

डॉ। प्रतिभा दीगुन धमतरी छत्तीसगढ़

बुजुर्गों का घर में स्थान

आज के भागम भाग वाली ज़िंदगी में किसी को फुर्सत ही कहीं है।

कि बुढ़ लोगो के पास बैठें।उन्से बाते करें उनकी भावनाएं समझें। तो भी सभी का सानिध्य चाहते हैं ।ये आ है ऐसी होती है ।।परीर भी स्थिथि हो जाता है। इसलिए सभी

बच्चों को चाहिए कि बुढ़ों की कीमत समझें।उनकी सेवा करें ,उनको भी अपना अमूल्य वक्त दें। बहुत जरूरत होती है।

यदि उस में अपनी को, सभी को इस पथ से गुजरना है।हम भी सदा जाते नहीं वने रहेंगे,यही सोच कर बुढ़ों का समान करें।। उनको अपने पर बोझ मत समझें।

बुजुर्गों से ही घर की रौनक होती है।चाहे वो घर में बैठे ही रहें।एक बुजुर्ग से ही घर गुलज़ार होता है।वहीं तो हमारे बगवां के वृक्ष हैं।। हम तो डालियाँ हैं।

यदि वृक्ष गिर जाए तो डालियों का कोई मूल्य नहीं रहना। इसीलिए वृक्त रहते सदैव हो जायें,और खुशी से बुजुर्गों को मानें,, इज्जत,, सम्मान दें।

बुढ़ाश्रम सभी की मत भेजना सोचें कल को आपके साथ यदि ऐसा हो तो!!

बुजुर्गों को अपना प्यार दो उनको ही अपना पथगामी,, समझो तो ज़िंदगी खुशियों से भरी रहेगी। एव हमेशा जीवन में अग्रसर होंगे,, इस जीवन की नदिया से।वही हमारी नैया के नाविक और खेवनहार हैं!!

सुष्मा सिंह उर्मि,,
कानपुर

बुजुर्गों का घर स्थान

बुजुर्गों का घर में अत्यंत ही महत्वपूर्ण स्थान होता है। उनके पास जीवन का सच्चा अनुभव होता है वह हमारी सुरक्षा कवच और मार्गदर्शक होते हैं।

बुजुर्ग विशाल बरगद की छाया की तरह होते हैं जो सदैव हमारे सुख-दुःख में हमारे साथ खड़े रहते हैं हमें हमेशा

की परेशानियों से हमें बचाते हैं जिस प्रकार वृक्ष की जड़ में पानी डालने से पूरा वृक्ष डाल पत्ती तना सब हरा भर

रहता है इस प्रकार जिस घर में बुजुर्गों की सेवा सम्मान आधार होता है वहां सुख समृद्धि होती है बुजुर्गों के घर में रहने से अनुशासन रहता है और वे परिवार को जोड़े रखने का सदैव प्रयास करते हैं उन में परिरक्षकता होती है और

सही गलत का निर्णय लेने की क्षमता होती है। जैसे हम अपनी कीमती वस्तु सोना चांदी आदि को संभाल

कर रखते हैं इस तरह से घर में माता-पिता और बड़े बुजुर्गों का देखभाल और उनकी सेवा संभाल भी अति आवश्यक है

घर के बड़े बुजुर्ग जैसे दादा-दादी नाना नानी घर के बच्चों के सच्चे और अच्छे मित्र होते हैं जिनका ख्याल वह हमारे बच्चों का रख सकते हैं उनका कोई नौकर चाकर नहीं रख सकते इस पढ़े लिखे दादा-दादी लोग बच्चों के होमवर्क में उनकी सहायता करते हैं उन्हें स्कूल ले जाने लाने का काम भी करते हैं और जब तक वह समर्थ रहते हैं घर के छोटे

बड़े कामों में सदैव हमारी मदद करते हैं बुढ़ापे में उनकी हमारी सेवा स्नेह सम्मान उनके लिए थोड़ा सा समय और सहारे की अत्यंत आवश्यकता होती है।

कहते हैं बुढ़ापे में बुजुर्गों का सम्भाव बच्चों जैसा हो जाता है तो जैसे वह हमारी बचपन में ज़िद पूरी करते थे हमारी शरारतों को सहते थे वैसे ही हमको भी उनकी जरूरतों का ध्यान रखना चाहिए।

आज पाश्चात्य सभ्यता के अंधानुकरण और भाग दौड़ भारी व्यस्त ज़िंदगी की वजह से घर के बड़े बुजुर्गों को हमारी उपेक्षा का सामना करना पड़ता है।

आज अच्छे परिवार और पढ़े लिखे शिक्षित लोगों के माता-पिता भी वृद्ध आश्रम में रहने को मजबूर हैं।

हमारे देश की ऐसी संस्कृति तो नहीं जहां बुजुर्गों को आश्रमों वृद्ध आश्रमों में रखा जाए। जिन घरों में बुजुर्ग माता-पिता वृद्ध जनो की सेवा होती है उनके लिए कहते हैं भगवान अति प्रसन्न रहते हैं उन्हें किसी प्रकार के अन्य पूजा पाठ और तीर्थ धाम की आवश्यकता ही नहीं है वृद्धों की सेवा से सब प्रकार का पुण्य प्राप्त हो जाता है।

यथासंभव हमारा प्रयास हो कि हमारी कथनी और करनी में समानता हो

अब जो बोलें जो लिखें वह हमारे कर्म में भी हो बचपन में मां हमें दादी की सेवा करने के लिए छोटा-छोटा प्रोत्साहन देती थी और हमें प्रोत्साहित करती थी हमारी दादी

छल फिर नहीं पाती थी इसीलिए उसके कपड़े धोना उनका कधी करना खाना देना मालिश करना आदि उनको छोटी-छोटी सेवा के कार्यों को सबको करना होता था।

बुर्जुा हमारे समाज और परिवार की अनीलाल धरोहर होते हैं उनके आशीर्वाद से ही सच्ची सफलता और खुशियां मिलती हैं बुजुर्ग हमारे जीवन का आधार है जिनसे हमें ज्ञान अनुभव और संस्कार प्राप्त होते हैं।

हमें दृष्टिकोण में जिस घर में बुजुर्गों के लिए नहीं है स्थान।

वह घर-घर नहीं है वह तो है जैसा कोई श्मशान।

रेनुका पटेल
हिलाई छत्तीसगढ़

रिशतों की गर्माहट

बड़े दा के घर पहुँचते ही प्रेमा ने अपने झोले से पुड़ी कवौड़ी खीर का चित्रण करते दिखते। कमरे के कोने में रखे मेज पर टेढ़ी पड़ी उनकी पैंट-कोट और टाई पहने एक लैक एंड काइट तस्वीर, जिसके शीशे में दरारें पड़ने और ज़मीं धूल के कारण धाब, साहब का चमकता सिलह गौर से देखने पर भी पढ़वाना मुश्किल था।

आज वही कमरा नई-नोली दुहन था, सजझकर कर अपनी सुन्दरता पर इतरता नज़र आ रहा था। सोफ़ा सेट और कोलीन बिछ्पे से खुद को गोंवाँवति महसूस कर रहा था। होता भी क्यों नहीं, हर्क कोना साफ-सुवरा होकर सुंदर दिज्यों, बहुमूल्य कलाकृतियों और फूलों के गुलदस्त से सभक जो रहा था।

आज वही कमरा नई-नोली दुहन था, सजझकर कर अपनी सुन्दरता पर इतरता नज़र आ रहा था। सोफ़ा सेट और कोलीन बिछ्पे से खुद को गोंवाँवति महसूस कर रहा था। होता भी क्यों नहीं, हर्क कोना साफ-सुवरा होकर सुंदर दिज्यों, बहुमूल्य कलाकृतियों और फूलों के गुलदस्त से सभक जो रहा था।

आज वही कमरा नई-नोली दुहन था, सजझकर कर अपनी सुन्दरता पर इतरता नज़र आ रहा था। सोफ़ा सेट और कोलीन बिछ्पे से खुद को गोंवाँवति महसूस कर रहा था। होता भी क्यों नहीं, हर्क कोना साफ-सुवरा होकर सुंदर दिज्यों, बहुमूल्य कलाकृतियों और फूलों के गुलदस्त से सभक जो रहा था।

आज वही कमरा नई-नोली दुहन था, सजझकर कर अपनी सुन्दरता पर इतरता नज़र आ रहा था। सोफ़ा सेट और कोलीन बिछ्पे से खुद को गोंवाँवति महसूस कर रहा था। होता भी क्यों नहीं, हर्क कोना साफ-सुवरा होकर सुंदर दिज्यों, बहुमूल्य कलाकृतियों और फूलों के गुलदस्त से सभक जो रहा था।

आज वही कमरा नई-नोली दुहन था, सजझकर कर अपनी सुन्दरता पर इतरता नज़र आ रहा था। सोफ़ा सेट और कोलीन बिछ्पे से खुद को गोंवाँवति महसूस कर रहा था। होता भी क्यों नहीं, हर्क कोना साफ-सुवरा होकर सुंदर दिज्यों, बहुमूल्य कलाकृतियों और फूलों के गुलदस्त से सभक जो रहा था।

आज वही कमरा नई-नोली दुहन था, सजझकर कर अपनी सुन्दरता पर इतरता नज़र आ रहा था। सोफ़ा सेट और कोलीन बिछ्पे से खुद को गोंवाँवति महसूस कर रहा था। होता भी क्यों नहीं, हर्क कोना साफ-सुवरा होकर सुंदर दिज्यों, बहुमूल्य कलाकृतियों और फूलों के गुलदस्त से सभक जो रहा था।

आज वही कमरा नई-नोली दुहन था, सजझकर कर अपनी सुन्दरता पर इतरता नज़र आ रहा था। सोफ़ा सेट और कोलीन बिछ्पे से खुद को गोंवाँवति महसूस कर रहा था। होता भी क्यों नहीं, हर्क कोना साफ-सुवरा होकर सुंदर दिज्यों, बहुमूल्य कलाकृतियों और फूलों के गुलदस्त से सभक जो रहा था।

आज वही कमरा नई-नोली दुहन था, सजझकर कर अपनी सुन्दरता पर इतरता नज़र आ रहा था। सोफ़ा सेट और कोलीन बिछ्पे से खुद को गोंवाँवति महसूस कर रहा था। होता भी क्यों नहीं, हर्क कोना साफ-सुवरा होकर सुंदर दिज्यों, बहुमूल्य कलाकृतियों और फूलों के गुलदस्त से सभक जो रहा था।

आज वही कमरा नई-नोली दुहन था, सजझकर कर अपनी सुन्दरता पर इतरता नज़र आ रहा था। सोफ़ा सेट और कोलीन बिछ्पे से खुद को गोंवाँवति महसूस कर रहा था। होता भी क्यों नहीं, हर्क कोना साफ-सुवरा होकर सुंदर दिज्यों, बहुमूल्य कलाकृतियों और फूलों के गुलदस्त से सभक जो रहा था।

आज वही कमरा नई-नोली दुहन था, सजझकर कर अपनी सुन्दरता पर इतरता नज़र आ रहा था। सोफ़ा सेट और कोलीन बिछ्पे से खुद को गोंवाँवति महसूस कर रहा था। होता भी क्यों नहीं, हर्क कोना साफ-सुवरा होकर सुंदर दिज्यों, बहुमूल्य कलाकृतियों और फूलों के गुलदस्त से सभक जो रहा था।

आज वही कमरा नई-नोली दुहन था, सजझकर कर अपनी सुन्दरता पर इतरता नज़र आ रहा था। सोफ़ा सेट और कोलीन बिछ्पे से खुद को गोंवाँवति महसूस कर रहा था। होता भी क्यों नहीं, हर्क कोना साफ-सुवरा होकर सुंदर दिज्यों, बहुमूल्य कलाकृतियों और फूलों के गुलदस्त से सभक जो रहा था।

आज वही कमरा नई-नोली दुहन था, सजझकर कर अपनी सुन्दरता पर इतरता नज़र आ रहा था। सोफ़ा सेट और कोलीन बिछ्पे से खुद को गोंवाँवति महसूस कर रहा था। होता भी क्यों नहीं, हर्क कोना साफ-सुवरा होकर सुंदर दिज्यों, बहुमूल्य कलाकृतियों और फूलों के गुलदस्त से सभक जो रहा था।

आज वही कमरा नई-नोली दुहन था, सजझकर कर अपनी सुन्दरता पर इतरता नज़र आ रहा था। सोफ़ा सेट और कोलीन बिछ्पे से खुद को गोंवाँवति महसूस कर रहा था। होता भी क्यों नहीं, हर्क कोना साफ-सुवरा होकर सुंदर दिज्यों, बहुमूल्य कलाकृतियों और फूलों के गुलदस्त से सभक जो रहा था।

आज वही कमरा नई-नोली दुहन था, सजझकर कर अपनी सुन्दरता पर इतरता नज़र आ रहा था। सोफ़ा सेट और कोलीन बिछ्पे से खुद को गोंवाँवति महसूस कर रहा था। होता भी क्यों नहीं, हर्क कोना साफ-सुवरा होकर सुंदर दिज्यों, बहुमूल्य कलाकृतियों और फूलों के गुलदस्त से सभक जो रहा था।

आज वही कमरा नई-नोली दुहन था, सजझकर कर अपनी सुन्दरता पर इतरता नज़र आ रहा था। सोफ़ा सेट और कोलीन बिछ्पे से खुद को गोंवाँवति महसूस कर रहा था। होता भी क्यों नहीं, हर्क कोना साफ-सुवरा होकर सुंदर दिज्यों, बहुमूल्य कलाकृतियों और फूलों के गुलदस्त से सभक जो रहा था।

आज वही कमरा नई-नोली दुहन था, सजझकर कर अपनी सुन्दरता पर इतरता नज़र आ रहा था। सोफ़ा सेट और कोलीन बिछ्पे से खुद को गोंवाँवति महसूस कर रहा था। होता भी क्यों नहीं, हर्क कोना साफ-सुवरा होकर सुंदर दिज्यों, बहुमूल्य कलाकृतियों और फूलों के गुलदस्त से सभक जो रहा था।

आज वही कमरा नई-नोली दुहन था, सजझकर कर अपनी सुन्दरता पर इतरता नज़र आ रहा था। सोफ़ा सेट और कोलीन बिछ्पे से खुद को गोंवाँवति महसूस कर रहा था। होता भी क्यों नहीं, हर्क कोना साफ-सुवरा होकर सुंदर दिज्यों, बहुमूल्य कलाकृतियों और फूलों के गुलदस्त से सभक जो रहा था।

आज वही कमरा नई-नोली दुहन था, सजझकर कर अपनी सुन्दरता पर इतरता नज़र आ रहा था। सोफ़ा सेट और कोलीन बिछ्पे से खुद को गोंवाँवति महसूस कर रहा था। होता भी क्यों नहीं, हर्क कोना साफ-सुवरा होकर सुंदर दिज्यों, बहुमूल्य कलाकृतियों और फूलों के गुलदस्त से सभक जो रहा था।

रिशतों का यही प्रेम ,आत्मीयता और परवाह ही तो निराशा अकेलेपन और ग़रीबी में भी गर्माहट ले आती है।

अनुराधा गर्ग दीपति जबलपुर

बुजुर्गों का घर में स्थान

चार बेटे और एक बेटे की मौं शांति देवी। एक अहंकारी, गुस्सेल और स्वार्थी स्त्री थी। शांति देवी की जवानी में चारों बहूएं कांपने लगी थी। बेटे वही करते जो मौं कहती।

शांति देवी के सबसे बड़े बेटे का असमय निधन हो गया। उसके बाद शांति देवी और उनके पति अपनी ज़िंदगी के संपूर्ण चल अचल संपत्ति सिर्फ बड़े बेटे के परिवार पर ही खर्च कर दिया।

दूसरी बहूएं के कुछ कहने पर एक ही जवाब होता- किसी और कि मुझे जरूरत नहीं, मेरे लिए तो बड़ी बहू और उसके बच्चे ही काफी हैं।

जब भी दूसरे पति और पोटियां शहर से गांव आते, बाबा जी का तो भरपूर प्यार मिलता किंतु शांति देवी के पैसे खर्च और घर गंदा हो जा रहा है का अहंकारी शब्द गुंस्ता रहता।

हमेशा तीन, व्यंग, कटाक्ष। समय बदल गया। सभी बेटे अलग-अलग शहरों में घर बनाकर वहीं पर अपना बसेरा बना लिया। बड़ी बहू के सभी बच्चे ऊंचे आदेवे पाकर समृद्ध जीवन जीने लगे।

बड़ी बहू भी समय के साथ असस्व्य रहने लगी। जिसके कारण अब वह पहले की तरह शांति देवी के हर इशारे पर नहीं नाचती। शांति देवी के पति भी गुजर गए।

अब शांति देवी को बकी बेटे बहू की याद आने लगी, जिन्हें उन्होंने बहुत पहले ही खुद से दूर कर दिया था। अपनी अड़ियल व्यवहार और पूरी ज़िंदगी के अन्यायपूर्ण रवैया के कारण।

बड़ी बहू का सारा काम निकल गया, जिसके लिए वह मोटी बनी हुई थी। अब उनका व्यवहार बदल गया । दूसरी तरफ बाकी बहू भी वही बातें दोहराने लगीं, मेरा घर गंदा हो जाएगा। हमसे सेवा नहीं होगा।

शांति देवी के पास आज भी पैसा संपत्ति सब कुछ है किंतु शरीर के असस्व्य होने के कारण अब वह रस्तबा नहीं रहा, जिसका उन्होंने सदैव दुरुपयोग किया।

अब उन्हें दो वक्त की रोटी भी बहुत मुश्किल से मिलती है। किसी भी बेटे बहू के घर में अब उनके लिए जगह नहीं है। उनका पूर्व में किया हुआ बहू के साथ भेदभाव, अन्याय और बेटों के द्वारा कराया गया अत्याचार अब बहूएं नहीं भूल पातीं।

शांति देवी ने अपनी आखिरी समय में ऐसी हालत, कभी स्वप्न में भी नहीं सोचा था। काश वह बहूएं और पोटो पोटियों के लिए स्नेह-प्यार और न्याय पूर्ण रवैया अपने वक्त में अपनाई होती; तो आज का मंजर कुछ और होता।

हमेशा बहूएं गलाए हुए बुजुर्ग सही नहीं होते हैं। कई बार बुजुर्गों का पहले का किया हुआ कर्म, बुढ़ापे में उनके सामने कष्ट, अकेलापन और पीड़ा के रूप में लौट कर आता है।

इसीलिए बहूं को वही प्यार, इज्जत और अपनानपन दीजिए: जो बुढ़ अवस्था में आपको चाहिए।

वरना आपके बनावे हुए घर में भी आपका स्थान आपको नहीं दिखेगा। क्योंकि आज के परिवेश में धर्म की दृष्टि नहीं, व्यवहार से व्यवहार निभाया जा रहा है।

सुनीता मिश्रा

काया-पलट

उदासी और मायूसी का प्रतिबिंब वो एक कमरा। अस्त-व्यस्त से उस कमरे में सब ओर धूल की परतें जमी नज़र आती। यहां-वहां बेतरतीब फैली किताबें और कपड़े अपनी लय का चित्रण करते दिखते। कमरे के कोने में रखे मेजे पर टेढ़ी पड़ी उनकी पैंट-कोट और टाई पहने एक लैक एंड काइट तस्वीर, जिसके शीशे में दरारें पड़ने और ज़मीं धूल के कारण धाब, साहब का चमकता सिलह गौर से देखने पर भी पढ़वाना मुश्किल था।

आज वही कमरा